पार्श्वनाथ विधान
(कल्याण मंदिर विधान)

रचयिता
सारस्वत कवि
आचार्य विभवसागर

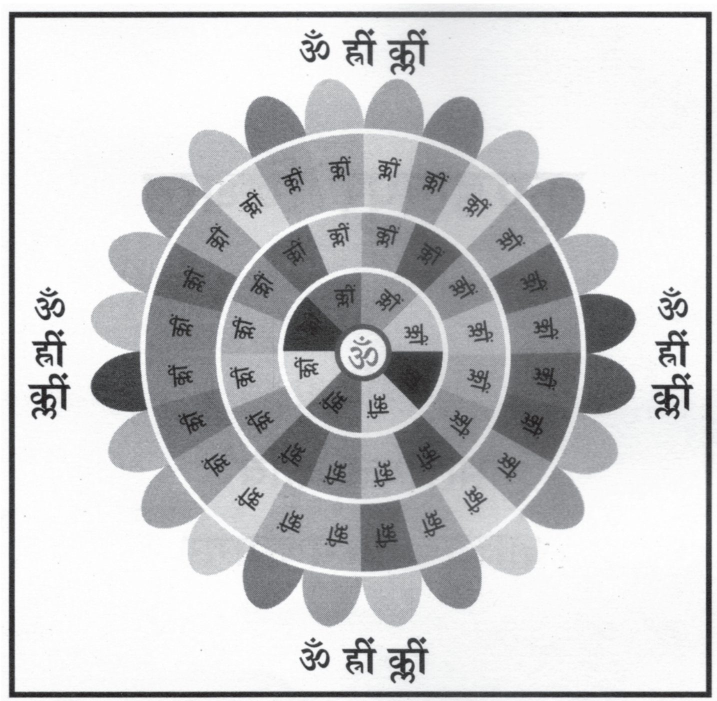
ॐ ह्रीं क्लीं
ॐ
ॐ ह्रीं क्लीं

प्रस्तावना

कल्याण मंदिर विधान

कल्याण मंदिर गीता लिखने की प्रेरणा श्रोत बना आचार्य कुमुदचन्द्र स्वामी द्वारा रचित 'कल्याण मंदिर स्तोत्र' जो श्रद्धा, भक्ति, भावना से ओत-प्रोत मंत्र-यंत्र से सम्पन्न ऋद्धि-सिद्ध प्रदाता, अनुपम, अद्वितीय काव्य है। जो कि उपसर्ग विजेता क्षमामूर्ति, संकट हरण, जिनेन्द्र पार्श्वनाथ के महानतम एवं अनंतानत गुणानुवाद हैं।

परम पूज्य आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज की महती अनुकम्पा एवं शुभाशीष से डिण्डौरी नगर (2002) में प्रथम बार श्री कल्याण मंदिर स्तोत्र का शिविर आयोजित हुआ। प्रभु पार्श्वनाथ की मनोज्ञ जिन प्रतिमा ने बरबस मन मोह लिया तभी अन्तस् में भावना जागृत हुई कि मंगल गीता की तरह इस कल्याण मंन्दिर स्त्रोत पर भी हिन्दी-भाषा में काव्य रचना लिखी जाये। फलस्वरूप विचारों को मूर्त रूप देने हेतु लेखनी अविराम चल पड़ी, प्रतिदिन एक काव्य का अध्ययन अध्यापन कराना पश्चात् उसे ही काव्य रूप में लिपिबद्ध कर देना और दो माह के निरन्तर प्रयास से रचना पूर्णकर 'बूँद-बूँद' से घड़ा भरता है, सूक्ति चरितार्थ हो गई।

प्रभाकर का कार्य है, प्रसून को पुष्पित कर देना, परन्तु सौरभ का प्रचार करना पवन का कार्य है। तथावत् साधु का कार्य कृति को तैयार कर देना, श्रावक का कार्य उसे प्रसारित करना।

उक्त कार्य में जिन-जिन ने भी मन वचन काय से सराहनीय सहयोग प्रदान किया सभी को मंगल आशीर्वाद। आप सभी कृति को पढ़कर भक्ति मुक्ति मार्ग प्रशस्त करें। इस मंगल भावना के साथ परम पूज्य गुरुदेव के चरणों में नमोस्तु...

पार्श्वनाथ पूजा

अतिशयकारी देव हमारे, पार्श्वनाथ स्वामी।
चमत्कार जग में प्रकटाते, पार्श्वनाथ स्वामी॥
सबसे न्यारे, सबको प्यारे, पार्श्वनाथ स्वामी।
हृदय कमल पर सदा विराजे, पार्श्वनाथ स्वामी॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ - तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल स्वभाव ज्यों शीतलता है, नहीं उष्ण रहना।
निज स्वभाव त्यों ज्ञानमयी है, नहीं उष्ण राग करना॥
वामानंदन काटो बंधन, वंदन स्वीकारो।
हे चिंतामणि पारस बाबा, हम सबको तारो॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहा

चंदन तरुवर मेरा आतम, कर्म नाग लिपटे।
पारस पूजा रूप गरुढ़ की, ध्वनि सुन शीघ्र हटे॥
वामानंदन काटो बंधन, वंदन स्वीकारो।
हे चिंतामणि पारस बाबा, हम सबको तारो॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! संसारताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामिति स्वाहा।

अक्षय गुण का स्वामी आतम, शक्ति रूप से है।
निज पद भूला आपद पाता, व्यक्ति रूप से है॥
वामानंदन काटो बंधन, वंदन स्वीकारो।
हे चिंतामणि पारस बाबा, हम सबको तारो॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अक्षय पद प्राप्त्ये अक्षतान् निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्प गन्ध जयों रहे पुष्प में, अन्य जगह नाहीं।
आत्म शान्ति त्यों है आतम में, विषयों में नाहीं॥
वामानंदन काटो बंधन, वंदन स्वीकारो।
हे चिंतामणि पारस बाबा, हम सबको तारो॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय विनाशनाय पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा

नाना विध नैवेद्य मनोहर, मन हरने वाला।
परम वैद्य मेरा आतम स्व, संवेदन वाला॥
वामानंदन काटो बंधन, वंदन स्वीकारो।
हे चिंतामणि पारस बाबा, हम सबको तारो॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीप उजाला, थाल सजाया, आरतियाँ लाया।
जिन दीपक से निज दीपक में, ज्ञान ज्योति लाया॥
वामानंदन काटो बंधन, वंदन स्वीकारो।
हे चिंतामणि पारस बाबा, हम सबको तारो॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्व, स्वाहा।

धूप सुगन्धित कहे, न तुझको, मुझे सूँघने आ।
हे ज्ञानी! तू जैनागम का, यह रहस्य मन ला॥
वामानंदन काटो बंधन, वंदन स्वीकारो।
हे चिंतामणि पारस बाबा, हम सबको तारो॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म वहनाय धूपं निर्व, स्वाहा।

फल दाता! फल करूँ समर्पित, शिवफल पाने को।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप, व्रत अपनाने को॥
वामानंदन काटो बंधन, वंदन स्वीकारो।
हे चिंतामणि पारस बाबा, हम सबको तारो॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

पावनता दो प्रसन्नता दो और प्रशमता दो।
जीवन पथ में समता धारूँ, ऐसी क्षमता दो॥
वामानंदन काटो बंधन, वंदन स्वीकारो।
हे चिंतामणि पारस बाबा, हम सबको तारो॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्त्ये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच कल्याणक (गर्भ कल्याणक)

स्वर्ग विहाये, गर्भ में आये, माता हरषाये।
इन्द देवता, स्वर्ग लोक से, उत्सव में आये॥
आज गर्भ कल्याण मनाऊँ, पार्श्वनाथ तेरा।
जिन पूजा से सफल बनेगा, यह नरतन मेरा॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जन्म कल्याणक

अश्वसेन घर बजें बधाइयाँ, खुशियों की बेला।
पार्श्वनाथ का जन्म हुआ है, लगा यहाँ मेला॥
आज जन्म कल्याण मनाऊँ, पार्श्वनाथ तेरा।
जिन पूजा से सफल बनेगा, यह नरतन मेरा॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्तये श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीक्षा कल्याणक

बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर, पार्श्वनाथ स्वामी।
महामुनीश्वर दीक्षा धारी, पार्श्वनाथ स्वामी॥
आज तपो कल्याण मनाऊँ, पार्श्वनाथ तेरा।
जिन पूजा से सफल बनेगा, यह नरतन मेरा॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलप्राप्तये श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ज्ञान कल्याणक

मोह नशाया, ज्ञान जगाया, तीर्थंकर स्वामी।
समवसरण देवेन्द्र रचाया, दिव्यध्वनि दानी॥
आज ज्ञान कल्याण मनाऊँ, पार्श्वनाथ तेरा।
जिन पूजा से सफल बनेगा, यह नरतन मेरा॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मोक्ष कल्याणक

श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, योग रोध कीना।
मुकुट सप्तमी के शुभ दिन ही, मोक्ष आप लीना॥
आज मोक्ष कल्याण मनाऊँ, पार्श्वनाथ तेरा।
जिन पूजा से सफल बनेगा, यह नरतन मेरा॥

ॐ ह्रीं श्रावण-शुक्ल सप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्तये श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पार्श्वनाथ विधान

(कल्याण मंदिर विधान)

इच्छित कार्यसाधक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ।

कल्याणों के मन्दिर हैं,
विश्व समाहित सुन्दर हैं।
हैं उदार महिमा वाले,
गुण महान गारिमा वाले॥

पाप विनाशक भव्यों के,
ज्ञाता दृष्टा द्रव्यों के।
जिनवर अभय प्रदाता हैं,
भयवानों के त्राता हैं॥

परम, पुनीत, प्रशंसा के,
पात्र बने अनुशंसा के।
भवसागर में पतितों को,
श्रावक, साधक, यतियों को॥

जग के उन सब जीवों को,
धर्ममार्ग अनुजीवों को।
हैं जहाज सम चरण कमल,
नमस्कार करके प्रतिपल॥

रचनाकर मुनि कुमुद्धन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥1॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं भव समुद्र-पतज्जन्तुतारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अभीप्सित सिद्धिकारक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

जिनवर गुण के आगर हैं,
गुण गरिमा के सागर हैं।
पूर्ण गुणों के गाने में,
गुणमय काव्य रचाने में॥

कमठ मान मतवाला था,
मान भस्म कर डाला था।
कमठ घमण्डी शठ रिपुवर,
उसे अग्निवत् थे प्रभुवर॥

महा विशाल बुद्धि वाला,
द्वादशांग मति थी वाला।
सुरगुरू अरे समर्थ नहीं,
उसकी भक्ति व्यर्थ नहीं॥

उन ही पार्श्व जिनेश्वर की,
कर्मजयी, तीर्थश्वर की।
संस्तुति को आरम्भ करूँ,
मन, वच, तन, प्रारम्भ करूँ॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥2॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जल भय निवारक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

अगम, अनूप जिनेश्वर की,
विमल रूप परमेश्वर की।
पूर्ण रूप तो शक्ति कहाँ?
साधारण भी भक्ति कहाँ?॥

मुझ जैसा अल्पज्ञ विभो,
तब स्वरूप अनभिज्ञ विभो।
अति महान अर्हद् महिमा,
ना सक्षम गाने गारिमा॥

देखा कभी न सूरज को,
तिमिर विनाशी सूरत को।
वह उलूक अत्यन्त चपल,
धृष्ट हुआ कहने प्रतिपल॥

वर्णन क्या कर पायेगा?
निश्चय ही रह जायेगा।
वह दिवान्ध हो दिनकर का,
अज्ञ अंध में जिनवर का॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥3॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

असमय निधन निवारक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

मोह नाश हो जाने से,
अनुभव में गुण आने से।
सम्यग्दर्शन निर्मल है,
चारित जिसका उज्जवल है॥

ऐसा मानव निश्चय हो,
गणना करने तन्मय हो।
गणना क्या कर सकता है?
ना समर्थ हो सकता है॥

प्रलयकाल ने बहा दिया,
सागर का जल सुखा दिया।
रत्नों का फिर ढेर वहाँ,
दिखता नयनों सदा सदा॥

पर वह गणना कौन करे?
गणना से वह सदा परे।
हे स्वामिन् ! तब गुण सारे,
निज अनंत महिमा थारे॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥14॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं गहनगुणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्त धन प्रदर्शक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

मैं मूरख, मैं अज्ञानी,
आप गुणों के हो खानी।
भरे हुये हो गुण गण से,
आभा पूरित कण-कण से॥

गुणगाने तैयार हुआ,
मैं अबोध लाचार हुआ।
सहज सुभाव हमारा है,
वन्दन भाव हमारा है॥

बालक ज्यों बुद्धि बल से,
अन्दर बाहर निश्छल से।
हाथों को फैलाकर के,
तुतलाकर बतलाकर के।।

सागर का विस्तार विभो,
ना कहने तैयार प्रभो?
सचमुच में वह कहता है,
मानो उसकी जड़ता है॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥5॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं परमोन्नतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्तान-सम्पत्ति-प्रसाधक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ।

हे स्वामी जी! आप सुगुण,
भरे हुये हैं उत्तम गुण।
योगी ध्यान लगाते हैं,
आठों यामों ध्याते हैं॥

आप कथन में न आते,
अनुभव कहे नहीं जाते।
निश्चय से इस वाणी का,
मेरे जैसे प्राणी का॥

होगा किस भाँति अवकाश,
यह न समझा तेरा दास।
बिना विचारे बोल रहा,
अन्तर्मन ये खोल रहा॥

चोंच डुबाते पानी में,
बोले अपनी वाणी में।
सदा-सदा वह पंछीगण,
जागा मेरा अन्तर्मन॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥6॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अगम्यगुणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अभीसिप्त जनाकर्षक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

महामहिम! मंगलकारी,
हे अचिन्त्य महिमाधारी।
पूरा संस्तव दूर रहे,
नाम मात्र भरपूर रहे।।

पार्श्व नाम का उच्चारण,
जय जिनेन्द्र सुख का कारण।
भव-भव के दुःख हरता है,
जग को सुखमय करता है॥

सूरज धरती तप्त करे,
सारा जग सन्तप्त करे।
प्यासा राही व्याकुल हो,
दूर जलाशय में जल हो॥

कमलों व्याप्त सरोवर से,
पवन उठे जल भर-भर के।
शीतलता को देता है,
तीव्र तपन हर लेता है॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥7॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

कुपितोपदंश विनाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

प्रभो! आपकी यह सूरत,
वीतराग छवि जिन मूरत।
हृदय कमल में आने पर,
अन्तस् में बस जाने पर॥

जन्म-जन्म के बन्धन भी,
कर्मोदय अनुबन्धन भी।
क्षण में ढीले पड़ जाते,
या फिर छोड़ चले जाते॥

चहक-महक हो उपवन में,
खुशबू के चन्दन वन में।
सर्पों की हो मण्डलियाँ,
कसे हुये हों कुण्डलियाँ॥

ज्यों मयूर के आने पर,
या आवाज सुनाने पर।
अंग शिथिल पड़ जाते हैं,
सीधे बिल को जाते हैं॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥8॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं कर्मबन्धविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व वृश्चिक विष विनाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

घोर सैकड़ों विपदायें,
एक साथ भी आ जायें।
जीवन जाता जान पड़े,
आपद ऐसी आन पड़े

दर्श आपका जो करले,
विपदायें पल में हरले।
छूटे भव के बंधन से,
दुःखों कष्टों के कन्दन से॥

चुपके-छिपके आते हों,
गाय चुराये जाते हों।
आँखों दिखता गोपालक,
चोर भागते हैं अपलक॥

छोड़े पशु बह जाते हैं,
अपने प्राण बचाते हैं।
चमत्कार गोपालक का,
कहना क्या जगपालक का॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥9॥

पूजा मंत्र- ॐ ह्रीं दुष्टोपवर्गविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तस्कर भय विनाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

तारण क्यों कहलाते हो?
कैसे पार लगाते हो?
सच्चे भक्त बुलाकर के,
हिरदय बीच बिठाकर के॥

स्वयं पार वह जाते हैं,
तुमको पार लगाते हैं।
सचमुच में यह बात सही,
चमत्कार यह तेरा ही॥

कारण क्या बतलाऊँ मैं,
यह उदाहरण गाऊँ मैं।
हवा भरी हो अन्दर में,
तिरकी मशक समुन्दर में॥

भक्त हृदय के अन्दर जिन!
करते पार समुन्दर जिन!
तारण-तरण कहाते हो,
भव से पार लगाते हो॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥10॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-अग्नि भय विनाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

उस अनंग सम अंग नहीं,
करता किसको भंग नहीं।
चाहे शिव या शंकर हों,
त्राता ब्रह्मा हरिहर हों॥

महादेव आधीन हुए,
तीनों लोकों दीन हुए।
जंगल का दावानल हो,
वरषे. बादल का जल हो॥

अग्नि प्रचण्ड बुझाता है,
जल को कौन जलाता है।
लेकिन यदि बड़वानल है,
जलता सागर का जल है॥

कामदेव है सागर जल,
पार्श्व देव हैं बड़वानल।
कामदेव को जला दिया,
मदन विजेता भला किया॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥11॥

पूजा मंत्र - ऎँ ह्रीं अनंगमथनाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि भय विनाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

बहुत बड़ा आश्चर्य अहो,
भक्तों का यह कार्य कहो!
तुमको हृदय समाते हैं!
फिर कैसे तिर जाते हैं?

क्योंकि आपकी गरिमा का,
या कि आपकी महिमा का।
दिखता कोई छोर नहीं,
तुमसे बढ़कर और नहीं॥

बल अनंत के स्वामी हो,
वीतराग शिवगामी हो।
तिरे भक्त भव सागर से,
लघु काल अतिलाघव से॥

हे अचिन्त्य महिमाधारी,
महापुरूष हे बलिहारी।
तेरा काम निराला है,
सचमुच विस्मय बाला है॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥12॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अतिशयगुरवे क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जल मिष्टता कारक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

अरे विभो! क्या कर बैठे?
पहले क्रोध जला बैठे।
कर्म चोर जब आते हैं,
आकर ध्यान चुराते हैं॥

तब कैसे जय पाये हो?
विश्व-विजय कहलाते हो।
फिर भी तो जय पायी है,
विस्मयता दर्शायी है॥

शीतल शिशिर कुहासा हो,
चारों ओर धुँआ सा हो।
हिमकण वरषा आती है,
आकर फसल जलाती है॥

हरे-भरे उस उपवन को,
अरे जलाती वन- वन को।
प्रभो आपका क्या कहना,
सदा शान्त शीतल रहना॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥13॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु स्नेह जनक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

परम रूप परमातम को,
अरस, अरूप जिनातम को।
सदा खोजते योगीगण,
अन्तस् में करके विचरण॥

मध्यभाग हृदय-स्थल में,
आत्म-तत्व अन्तस्-तल में।
अरे खोजना उत्तम है,
परमातम सर्वोत्तम है॥

परम धरम वह सम्पादन,
कमल बीज का उत्पादन।
कमल कर्णिका के अन्दर,
अमल कांति से है सुंदर॥

जिसमें बीज पनपता है,
नहीं दूसरा रहता है।
निर्मल मन निज आतम है,
उसमें ही परमातम है॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥14॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चोरी का गल द्रव्यदायक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

प्रभो! आपके चिन्तन से,
चरणों के अवलम्बन से।
मन से तुमको भजकर के,
नाम जिनेश्वर जपकर के॥

शुद्ध भावना भा करके,
निशदिन तुमको ध्याकर के।
कर जिनेन्द्र सुमरण प्रतिपल,
पल में पाते मोक्ष महल॥

स्वर्ण कालिमा वाला हो,
जिसे आग में डाला हो॥
तपकर कुन्दन होता है,
प्रस्तर कल्मष खोता है॥

चेतन कंचन कल्मष तन,
ध्यान अग्नि की तेज तपन।
कल्मषता को खोती है,
शुद्ध चेतना होती है॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥15॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं कर्मकिट्टदहनाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गहन वन - पर्वत भय विनाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

औदारिक तन मंदिर में
मनः वेदि के अन्दर में॥
जिनवर जहाँ बिठाया है,
तीनों कालों ध्याया है॥

कैसे उसका नाश करें?
जिसमें प्रभु जी वास करें।
पुद्गलमय उस काया का,
भव-भव की उस माया का॥

कारण तुम मध्यस्थ हुए,
सदा सदा को स्वस्थ हुए।
पक्षापात से परे हुए,
वीतरागता भरे हुए॥

इस महान गुण के धारक,
जीव मात्र के हित कारक।
महापुरूष जब आते हैं,
विग्रह भाव मिटाते हैं॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥16॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं बेहदेहिकलहनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

युद्ध विग्रह विनाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

निज आतम परमातम है,
परमातम निज आतम है।
इस अभेद बुद्धि द्वारा,
आत्मज्ञान शुद्धि द्वारा॥

इस जग में धीमानों ने,
जिनवर के दीवानों ने।
आत्म रूप से ध्याया है,
निज पर भेद मिटाया है॥

इसका अरे प्रभाव हुआ,
आप सरीखा भाव हुआ।
यह अमृत है ऐसा ध्यान,
अनुशीलन चिन्तन विज्ञान॥

अमृतमयी हो जाता है,
विष को दूर भगाता है।
भले रहे वह गंगा जल,
जिसमें है मंत्रों का बल॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥17॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं संसारविषसुधोपमाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्प विष विनाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

मोह महातम नाशक हे!
लोकालोक प्रकाशक हे!
सच्चे देव जिनेश्वर हे!
वीतराग परमेश्वर हे!

परवादि परमत वाले,
मतवालों के मतवाले॥
तुमको अपना कहते हैं,
नाम अनेकों धरते हैं॥

कर्ता! धर्ता! शिव! शंकर!,
ब्रह्मा! प्रभु! हरि हर!
दृष्टि विमल न रहने से,
मिथ्या मल के बहने से॥

धवल वर्ण का शंख विमल,
दिखता रंग अधिक मिल जुल।
दृष्टि दोष हो जाने से,
रोग पीलिया आने से॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥18॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं सर्वजनवन्धाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र-रोग विनाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

धर्म देशना के पल में,
समवशरण के शुभ थल में।
रत्न कान्ति से दमक रहे,
मुक्ताओं से चमक रहे॥

पत्र लता शाखायें फल तरू,
अशोक अत्यन्त विमल।
शोक रहित हो जाता है,
चमत्कार हो जाता है॥

हुआ प्रभाव अचेतन पर,
दूर रहे तब चेतन पर।
पूर्वोदय में होने से,
सूर्योदय के होने से॥

अरे प्रफुल्लित कौन नहीं?
जन-मन पुलकित कौन नहीं?
वृक्ष सहित सारा संसार,
हुआ प्रफुल्लित अपरम्पार॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनारता हूँ॥19॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अशोकवृक्षविराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्चाटनकारक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

सुरगण नभ से बरषाते,
पुष्पवृष्टि कर हरषाते।
समवशरण की सृष्टि भरें,
कुसुम निरन्तर वृष्टि करें॥

हे जिनवर! आश्चर्य हुआ,
ऐसा अद्भुत कार्य हुआ।
चारों तरफ सुमन गिरते,
डण्ठल नीचे ही रहते॥

प्रभु चरणों में आते हैं,
मानों ये बतलाते हैं।
अथवा सचमुच है मुनिवर,
पाया जिनने तेरा दर॥

सुमन-सुमन सम आते हैं,
सुमन भाव अपनाते हैं।
उत्कर्षण हो धर्मों का,
आकर्षण हो कर्मों का॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥20॥

पूजा मंत्र- ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि शोभिताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुष्क वनोपवन विकाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

हे जिनेन्द्र ! तव वचनों को,
मंगलमयी प्रवचनों को।
अमृतवाणी कहते जीव,
युक्ति संगत कथन अतीव॥

हृदय सिन्धु से प्रकट हुये,
अमल अखण्डित अमिट हुये।
अनेकान्त रस भरे हुये,
स्याद्वाद पर खरे हुये॥

कर्णाञ्जलि से पीकर के,
रसास्वाद अनुभव करके।
जग को परमानन्द हुआ,
अजर-अमर जग वृन्द हुआ॥

अमृत वचन तुम्हारे हैं,
अमर बनाने वाले हैं।
भव्य जीव रसपान करें,
अमर तत्त्व शिवधाम वरें॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥21॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिविराजिताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर फलदायक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

रजत कान्ति सम वर्ण धवल,
इन्द्र दुराते चमर विमल।
नीचे ऊपर आते हैं,
नम्र भाव अपनाते हैं॥

होले होले डोल रहे,
अपने मुख से बोल रहे।
हे स्वामिन्! यह मानूँ में,
निश्चय ऐसा जानूँ मैं॥

पुण्डरीक पुरुषोत्तम को,
देवोत्तम, सर्वोत्तम को।
परमदेह चरमोत्तम को,
तीर्थंकर परमोत्तम को॥

निर्मल भाव बनाकर के,
जिन चरणों में आकर के।
भक्ति भाव जो नमन करें,
ऊर्ध्वलोक में गमन करें॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥22॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं सुरचामरविराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

राज्य सम्मानदायक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

स्वर्णमयी आसन्दी है,
प्रभो! आपकी सन्निधि है।
रत्नखचित सिंहासन पर,
तीर्थंकर के आसन पर॥

श्याम वर्ण तन शोभित है,
तीन लोक मन मोहित है।
दिव्य ध्वनि गम्भीर वचन,
भव्य जीव सुनते प्रवचन॥

मानों अचल सुदर्शन पर,
स्वर्णाचल मन्दारगिरि पर।
दिव्य छटा वरषायें हों,
सावन बादल छाये हों॥

ऊँचे स्वर गर्जन करते,
वन मयूर के मन हरते।
हर्ष विभोर करें दर्शन,
देखे इकटक आकर्षण॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥23॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं पीठत्रयनायकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु विजित राज्य प्रदायक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

रश्मि पुञ्ज सा चमक रहा,
आभाओं से दमक रहा।
कान्तिमान आभामण्डल,
नव्य सृष्टि का नव मंगल॥

नीलवर्ण आभाओं से,
कोटि कोटि शोभाओं से।
तरू अशोक तब लुका-लुका,
देख रहा है छुपा-छुपा॥

पीले पीले वर्ण हुए,
शोभाहीन विवर्ण हुए।
वीतराग के दर्शन से,
गुण समूह आकर्षण से॥

राग-रंग ना खोता क्या?
मन विराग ना होता क्या?
वीतरागता लाता है,
वीतराग बन जाता है॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥24॥

पूजा मंत्र- ॐ ह्रीं भामण्डलमण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असाध्य रोग शामक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

दिग्-दिगन्त नभ मण्डल में,
गगन भेद धरणी तल में।
सुरदुन्दुभि जयघोषों से,
ऊँचे स्वर उद्घोषों से॥

स्वर्ग निमन्त्रण भेज रही,
जग आमंत्रण भेज रही।
समवशरण में आने का,
मोक्षपुरी ले जाने का॥

सुनो सुनो हे जगवासी,
मुक्तिरमा के अभिलाषी।
जिन मण्डप में आ जाओ,
पार्श्वनाथ के गुण गाओ॥

महारथी यह शिवपथ के,
सही सारथी शिवरथ के।
रथ में हमें बिठाते हैं,
मुक्ति धाम ले जाते हैं॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥25॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं देवदुन्दुभिनादाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनसिद्धि प्रतिष्ठापक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

प्रभो ! आपके आने पर,
ज्ञानोदय हो जाने पर।
हुये प्रकाशित लोकत्रय,
अंधकार का हुआ विलय॥

तारागण भ्रजनीनायक,
चन्द्रबिम्ब शोभादायक।
कान्ति विहीन मलीन हुआ,
अधिकारों से हीन हुआ॥

कहो भला वह कहाँ रहे,
कान्तिमान वह जहाँ रहे।
मुक्ताओं से सज धज कर,
छत्रत्रय तन रच-पच कर॥

रूप बदल कर आया है,
एक सहारा पाया है।
तीन लोक के ईश्वर का,
भूतनाथ जगदीश्वर का॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥26॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहिताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वैर विरोध विनाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

समवशरण में गन्धकुटी,
जिनवर गुण महिमा प्रकटी।
भगवन् ! आप सुशोभित हैं,
चारों दिशि मन मोहित हैं॥

कान्तिमान मणियाँ रहती,
कान्तिवान तुमको कहती।
स्वर्ण कहे तेजस्वी हो,
कहता रजत यशस्वी हो॥

कान्तिमान माणिक मणियाँ,
तेजवन्त हीरक लड़ियाँ।
रजतपूर्ण संरचना है,
तीन पीठिका रचना हैं॥

तीन लोक आपूरित हैं,
गुण समूह से पूरित हैं।
महाप्रतापी ! महिमाधर !
तीर्थंकर पारस जिनवर॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥27॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

यशः कीर्ति प्रसारक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

नम्र हुए अमरेन्द्रों के,
शीष झुके सुर वृन्दों के।
मुकुटों में मण्डित मणियाँ,
रत्नों से चित्रित लड़ियाँ॥

दिव्य मौलि की मालायें,
जिनवर के चरणों आयें।
मुकुट छोड़कर आश्रय लें,
प्रभो पाद का प्राश्रय लें॥

सत्य बात कहता स्वामी,
वीतराग! जिन! निष्कामी!
अच्छे मन वाले प्राणी,
भव्य जीव सम्यग्ज्ञानी॥

एक ठिकाना पाते हैं,
और कहीं न जाते हैं।
पार्श्वनाथ की शरण वरें,
चरण कमल में रमण करें॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥28॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं भक्तजनानवनपतिराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आकर्षणकारक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

भव सागर से नाथ विमुख,
हुये आपके जो अनु मुख।
पृष्ठभाग रहने वाले,
अनुशरणा करने वाले॥

ऋषि मुनिगण अनगारों को,
श्रावक गण सागारों को।
जिनवर पार लगाते हैं,
तारणहार कहाते हैं॥

कुम्भकार का कुम्भ भला,
अग्निपाक में पका चला।
अवमुख होकर गागर वह,
पार लगाता सागर वह॥

अरे कुम्भ तो पाक हुए,
और आप निष्पाक हुए।
फिर भी तो भव तारक हो,
सचमुच विस्मय कारक हो॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥29॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं निजपृष्ठलग्नभयतारकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असंभव कार्यसाधक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

धर्म तीर्थ सञ्चालक हे!
जगती के जन पालक हे!
तीन लोक के स्वामी हो,
फिर भी दुर्गत नामी हो॥

सिद्ध, सनातन, शाश्वत हो,
निराकार गुण भास्वत हो।
अविनाशी, अक्षर, अन्वित,
फिर भी तुम हो लेख रहित॥

अज्ञजनों के रक्षक हो,
अखिल सृष्टि संरक्षक हो।
अबुध-वन्त कहलाते हो,
फिर भी लोक जताते हो॥

तीनों लोकों कालों को,
द्रव्य अनंतों चालों को।
युगपत् जिनवर जान रहे,
युगपद् जिनवर ध्यान रहे॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥30॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं विस्मयनीयमूर्तये क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभाशुभ प्रश्नदर्शक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

रूष्ट-दुष्ट कमठासुर ने,
धृष्ट-भृष्ट कमठासुर ने।
मिथ्यातम की शठता से,
जन्म-जन्म की हठता से॥

प्रलयकाल की आँधी सा,
तूफाँ चला मुदा धी सा।
अवनी अम्बर डरा दिया,
धूल उड़ाकर भरा दिया॥

शम्बर की रजमय माया,
ढक न सकी प्रभु की छाया।
दुर्द्धर अति उपसर्ग हुआ,
तुमने तो अपबर्ग लिया॥

लेकिन उसकी भूलों ने,
पाप कर्म की धूलों ने।
जकड़ लिया था शम्बर को,
पकड़ लिया था शम्बर को॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्‌भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥31॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं कमठोत्थापितधूल्युपद्‌वजिताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्टता प्रतिरोधी

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ।

कड़-कड़कड़-कड़-कड़क रहीं,
तड़-तड़तड़-तड़-तड़क रहीं।
मेघ बिजलियाँ ऊपर से,
अग्नि वरषे अम्बर से॥

पर्वत गिर-गिर टूट पड़े,
कानों पर्दे फूट पड़े।
भयकारी घन गर्जन से,
विद्युत रूप विसर्जन से॥

मूसलधार अटूट पड़े,
मानो जलधर फूट पड़े।
बड़े-बड़े ओले गिरते,
मानों पत्थर ही पड़ते॥

भाँति-भाँति दुष्कृत्य किये,
घोर कर्म के कृत्य किये।
कमठ शत्रु बनकर आया,
किञ्चित् नहीं डिगा पाया॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनता हूँ॥32॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं कमठकृत जलोधारोपसर्ग निवारकाय क्लीं महाबीरजाक्षर-सहिंताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापाताविवृष्टि निरोधक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

भूत-पिशाचों व्यन्तर को,
लेकर जन्तर-मन्तर को।
महा भयंकर रूपों को,
भेजा निकट कुरूपों को॥

नरमुण्डों को मालायें,
लम्बी-लम्बी लटकायें।
निकले मुख से ज्वालायें,
मानों विश्व निराल जायें॥

काले-काले बालों से,
सर्पो जैसी चालों से।
मानो अजगर लटक रहे,
इधर-उधर फण पटक रहे॥

खोटे-खाटे कर्मो का,
महा भयंकर मर्मो का।
कमठासुर ने बन्ध किया,
भव-भव को दुर्बन्ध किया॥

रचनाकर मुनि कुमुदचन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूं।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूं ॥33॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं कमठकृतपैशाचिकोपद्रव-जयनशीलाय क्लीं महाबीजाक्षर - सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत-पिशाच पीड़ा तथा शत्रु भय नाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर मं ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

धन्य-धन्य वे धरती पर,
धन्य-धन्य वे जीवन भर।
अखिल विश्व के वे प्राणी,
आत्म विवेकी विज्ञानी॥

तज संकल्प विकल्पों को,
झूठे भव के जल्पों को।
चिन्ताओं जंजालों को,
कामकाज घरवालों को॥

रोम-रोम रोमाञ्चित हो,
भक्ति भाव से सिञ्चित हो।
तीनों काल विधानों से,
आगम के सरधानों से॥

श्रद्धास्पद पद यमलों की,
जिनवर के पद कमलों की।
करते आराधन वन्दन,
उनको मेरा अभिनन्दन॥

रचनाकर मुनि कुमुदचन्द के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥34॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मृगी उन्माद - अपस्मार विनाशक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

हे मुनीश ! मैं मान रहा,
निश्चय ऐसा जान रहा।
इस अपार भव वारिधि में,
विपदाओं की जलनिधि में॥

संकट हरण जिनेश्वर का,
अंतिम शरण जिनेश्वर का।
ऋद्धि सिद्धि प्रदाता का,
पारस नाथ विधाता का॥

नाम मंत्र भी ध्याया ना,
कानों कभी सुनाया ना।
हर आपद हरने वाला,
सुख सम्पद वरने वाला॥

नाम मंत्र यदि सुन लेता,
सच्चे मन से गुन लेता।
विपदाओं की ये नागिन,
कभी पास क्या आती जिन?॥

रचनाकर मुनि कुमुदचन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥35॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं पवित्रनामधेयाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

सर्ववशीकरण

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

चिन्तामणि जिन चरणाम्बुज,
कल्पवृक्ष जिन पादाम्बुज।
कामधेनु सम देवे फल,
इच्छा पूरित महा कुशल॥

मुनिवर पद अम्भोजों की,
जिनवर पाद सरोजों की।
जन्म-जन्म जन्मान्तर में,
काल अनादिक अंतर में॥

निर्मल भावों वन्दन से,
अथवा अक्षत चन्दन से।
कभी नहीं की जिन पूजा,
पूजा सम फल ना दूजा॥

बिन पद पूजे मिले विपद,
केवल आपद की पद-पद।
मेरा हुआ पर भव है,
एक बार ना भव-भव है।।

रचनाकर मुनि कुमुदचन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्डाभरण बनाता हूँ ॥36 ॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाक्षरसंहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल कष्ट निवारक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

वीतराग सर्वज्ञ विभो !
कष्ट निवारक जगत विभो।
पहिले देखा कहीं नहीं,
एक बार भी कभी नहीं॥

मिथ्यातम अंधियारे से,
मोहकर्म कजरारे से।
ढके हुये दोनों लोचन,
किया कभी ना अवलोकन॥

कर लेता तेरा दर्शन,
वर लेता सम्यग्दर्शन।
तो निश्चय इन कर्मों के,
महा भयंकर मर्मों के॥

बन्ध कभी भी होते क्यों?
कर्मोदय दु:ख देते क्यों?
मैं दुखियारा होता क्यों?
जन्म-जन्म दुख रोता क्यों?

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥37॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लीं महाबीजाक्षरसंहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असह्व कष्ट निवारक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ।

जगदबन्धु! जिनवर जिन का!
जन बांधव, जिन अर्हन् का।
तीर्थकर चौबीसों का,
सच्चे देव मुनीशों का॥

सुरतालों संगीतों से,
वाद्य यन्त्रमय गीतों से।
नाम-सुना अर्चायें की,
दर्शन कर चर्चायें की॥

लेकिन कहता अनुभव से,
मुझ अबोध से निश्चय से।
अंतस् तुम्हें बिठाया ना,
आत्मभाव से ध्याया ना॥

भक्ति शून्य आचार विमल,
कभी ना देता मुक्तिफल।
इसीलिए दुःख पात्र बना,
कभी ना देता मुक्तिफल।

रचनाकर कुकुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूं।
अभिनन्दन कर, सद्‌भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूं ॥38॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं भक्तिहीनजनमाध्यस्थाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्री-पार्श्वनाथाय अर्ध निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व ज्वरशामक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

जन-बन्धु! हे दीनदयाल!
हे शरणागत सुप्रतिपाल!
हे दुखियों के जनवत्सल!
के करुणालय! हे शुभथल!॥

इन्द्रिय जेता हे जिनवर!,
मनः विजेता हे मुनिवर !
पारसनाथ महेश्वर है!,
जिनवर नाथ जिनेश्वर हे!॥

भक्ति भाव से नमन करूँ,
चरणों श्रद्धा सुमन धरूँ।
करुणालय ! करुणा करके,
दया भाव मुझ पर धरके॥

दलन करो दुःखांकुर का,
भव-भव के बीजांकुर का।
करो नाथ अंधेर नहीं,
अब इसमें कुछ देर नहीं॥

रचनाकर कुमुदचन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूं ॥39॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं भक्तजनवत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विषमज्वर विघातक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

जग पावन कर्ता भगवन,
गुण असंख्य धर्ता भगवन्।
शरणागत आश्रयदाता,
चरणागत प्राश्रय दाता॥

कर्म शत्रु के जेता हे!
मोक्ष मार्ग के नेता हे!
हे प्रसिद्धि महिमा वाले,
परम सिद्ध गरिमा वाले॥

तव चरणाम्बुज पा करके,
भक्ति भाव मन ला करके।
चिन्तन मन्थन किया नहीं,
जो गुण गुन्थन किया नहीं॥

अरे अभागा मैं ऐसा, हा!
हा! जीवन मुझ जैसा।
धिक्-धिक् मैं तो मरा अरे!
धरती पर क्यों धरा अरे॥

रचनाकर-कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥40॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं सौभाग्यदायकपदकमलयुगाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्त्र-शस्त्र विघातक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

वन्दनीय देवों द्वारा,
अर्चनीय इंद्रों द्वारा।
अखिल विश्व के ज्ञाता है!
हे सर्वज्ञ! विधाता हे!॥

पृथ्वी के हर कण-कण के,
भूत भविष्यत् इस क्षण के।
वस्तुसार को ज्ञान रहे,
केवल बोध प्रमाण रहे॥

भवसागर के तारक हे!
जगती के उद्धारक है।
आज बचाओ आकर के,
इस अपार भव सागर से॥

दुखिय के दुख दूर करो,
सुखिया! सुख भरपूर करो।
पार्श्वनाथ हे जीवन धन!
पावन कर दो मम जीवन॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री सम्बन्धी समस्त रोगशामक

पार्श्वनाथ के चरण कमल को, मन मन्दिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

तुम ही एक सहारे हो,
पारसनाथ हमारे हो।
तव चरणों का चेरा मैं,
करता चरण वसेरा मैं॥

प्रभो चरणों की भक्ति का,
भावों संचित शक्ति का।
यदि कुछ भी फल फलता है,
लाभ यदि कुछ मिलता है॥

धन वैभव की प्यास नहीं,
परभव सुख की आस नहीं।
केवल इतना दान करों,
वरद प्रभो वरदान चरों॥

आप हमारे स्वामी हों,
नयनों के पथगामी हों।
जन्म-जन्म तक साथ रहे,
तव पद मेरा माथ रहे॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूं।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ॥42॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं पुण्यबहुजनसेव्याय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बंधन मुक्तिदायक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मंदिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

निश्चल हो उपयोगों से,
शुद्ध भाव शुभ योगों से।
मंजु मनोहर सुखमण्डल,
देख रहे हैं मन मंगल॥

बाँध बाँध कर निजमन को,
प्रभो! आपके आनन को।
वह अनिमेष विलोक रहे,
नयनों से अवलोक रहे॥

भरे-हुये उल्लासों से,
रोम-रोम, हर श्वासों से।
अंग-अंग पुलिकित होकर,
अन्तःकरण मुदित होकर॥

विधि विधान अपनाकर के,
मन में तुम्हें समाकर के।
तेरा संस्तव रचते हैं,
मंदिर गीता भजते हैं॥

रचनाकर मुनि कुमुदचन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥43॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं जन्ममृत्युनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिंताय श्री पार्श्वनाथ अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभव अर्द्धक

पार्श्वनाथ के चरणकमल को, मन मंदिर में ध्याता हूँ।
प्रभु के आराधन वन्दन में, मन्दिर गीता गाता हूँ॥

आँखों के जो तारे हैं,
लगते प्यारे-प्यारे हैं।
चन्द्र बिम्बवत् कमलों को,
कुमुदचन्द्र मन अमलों को॥

चित् चैतन्य गुणेश्वर की,
क्षमा मूर्ति तीर्थेश्वर की।
पारसनाथ जिनेश्वर की,
पुण्य प्रताप यशेश्वर की॥

संस्तुति को रचने वाले,
मन वच तन भजने वाले।
भक्त अमर बन जाते हैं,
स्वर्ग सम्पदा पाते हैं॥

भव्य मनुज तन पाकर के,
रत्नत्राय अपनाकर के।
कल्मषकोष नशाते हैं,
मुक्ति 'विभव' पद जाते हैं॥

रचनाकर मुनि कुमुद चन्द्र के, शब्द, अर्थ, मन लाता हूँ।
अभिनन्दन कर, सद्भक्तों को, कण्ठाभरण बनाता हूँ ॥44॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्रयतिसेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

वीतराग सर्वज्ञ जिन, हे पारस भगवान।
जयमाला वर्णन करूँ, दो समतारस दान॥

(रखता छनद)

जिनालय दर्शन से ही मात्र, थकावट सब मिट जाती हैं।
पुण्य सम्पादन होता है, रुकावट सब हट जाती हैं॥
हर्ष वर्द्धन होता है नाथ! समस्या सब छट जाती हैं।
शारदा संस्तुति गाती है, सरस्वती स्वर प्रकटाती हैं॥1॥

भक्ति से नम्रीभूत है माथ, जुड़े हैं जिन भक्ति में हाथ।
कण्ठ से बाहर निकले शब्द, स्वयं संस्तव बन जाते नाथ॥
मिली हैं खुशियाँ अपरम्पार, बताता रोम-रोम रोमांच।
बहे आनन्द स्त्रोत अविरल, रहा न कष्ट मुझे अब रंच॥2॥

अहो यह चंचल मन जिनराज! हुआ है जिनभक्ति मे लीन।
आज तो पंच इन्द्रियाँ नाथ! हुई हैं स्वतः आत्माधीन॥
सहज शुद्धि हुई योगों की, मिटे सब मन वच तन के रोग।
अर्चना करके पारसनाथ!, हुआ है यह निर्मल उपयोग॥3॥

विवेकी मानव ही जग में, आप सम वह गुण पाने को।
नमन वंदन संस्तव करते, आप सा पथ अपनाने को॥
बाह्य विषयों को तजकर नाथ! आपको विषय बनाते हैं।
आपकी सेवाओं का फल, सिद्ध पद में वे पाते हैं॥4॥

अहो यह विद्या का आलय, समझ विद्यार्थी आते हैं।
अहो यह श्रद्धा का आलय, समझ श्रद्धार्थी आते हैं॥

अहो यह आत्मा का आलय, समझ आत्मार्थी आते हैं।
अहो यह समवसरण सचमुच! समझ धर्मार्थी आते हैं॥5॥

प्रभु के सुंदर चरण जहाज, अरे पाकर के जग के जीव।
पार हो जाते यह संसार, पार पाना जो कठिन अतीव॥
सहज, आनन्द निकेतन आप, श्रीमद् चिदानंद भगवान।
आपकी चरण अर्चना से, करूँ मैं निजानंद रसपान॥6॥

अपकी अमृतवाणी सुन, मोह विष हो जाता है शान्त।
आपकी शान्त छवि लखकर, हुआ मन निर्विकल्प विश्रान्त॥
आप संतोष देहधारी, करो अब पाप ताप के खण्ड।
आपकी भक्ति, वंदना से, प्राप्त हो गुण सम्यक्त्व अखण्ड॥7॥

आपको सिद्धालय में नाथ, राजते जो सुख मिलता है।
आपके चरणों में आकर, मुझे भी वह सुख मिलता है।
अहो सिद्धालय में भगवान, आपको जौ लौं रहना है।
आपके चरणालय भगवान, मुझे भी तौं लौं रहना है॥8॥

आपके आनन पर भगवान, समाया वीतराग विज्ञान।
आपके नयन युगल अनिमेष, कराते दानों नय का ज्ञान॥
आप कृतकृतय हुए जिनराज, बताती मुद्रा पद्मासन।
आप अब आकर के भगवान्! विराजो मेरे हृदयासन॥9॥

चरण उनके हैं दोनों धन्य, चला आया जो तेरे पास।
हृदय उनका है सचमुच धन्य, हृदय में जिनके तेरा वास॥
हाथ उनके हैं दोनों धन्य, किया जिनने तेरा अभिषेक।
माथ उनका है धन्य, विनय का जागा जिन्हें विवेक॥10॥

नमन अरिहंत देव तुमको! नमन हो सिद्धि प्रिया स्वामी।
नमन हे वीतराग तुमको! नमन हो अखिल विश्व ज्ञानी॥
नमन हित उपदेशी तुमको! नमन हो इष्टदेव मेरे।
नमन हो अतिशयकारी देव! नमन हो श्रेष्ठ देव मेरे॥11॥

नयनों में छवि आपकी, अन्तर्मन में ध्यान।
अब निश्चित हो जायेगा, निज आतम कल्याण॥12॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

(दोहा)

नयन बोलते आपके, मुख न बाले बोल।
विश्व धरा पर आप हो, प्रभु कितने अनमोल॥13॥